कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

(In Words) ----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में - ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [ ]

विषय ..... हिन्दी साहित्य .....

परीक्षा का दिन ..... गुरुवार .....

दिनांक 25-06-2020 .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निदश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

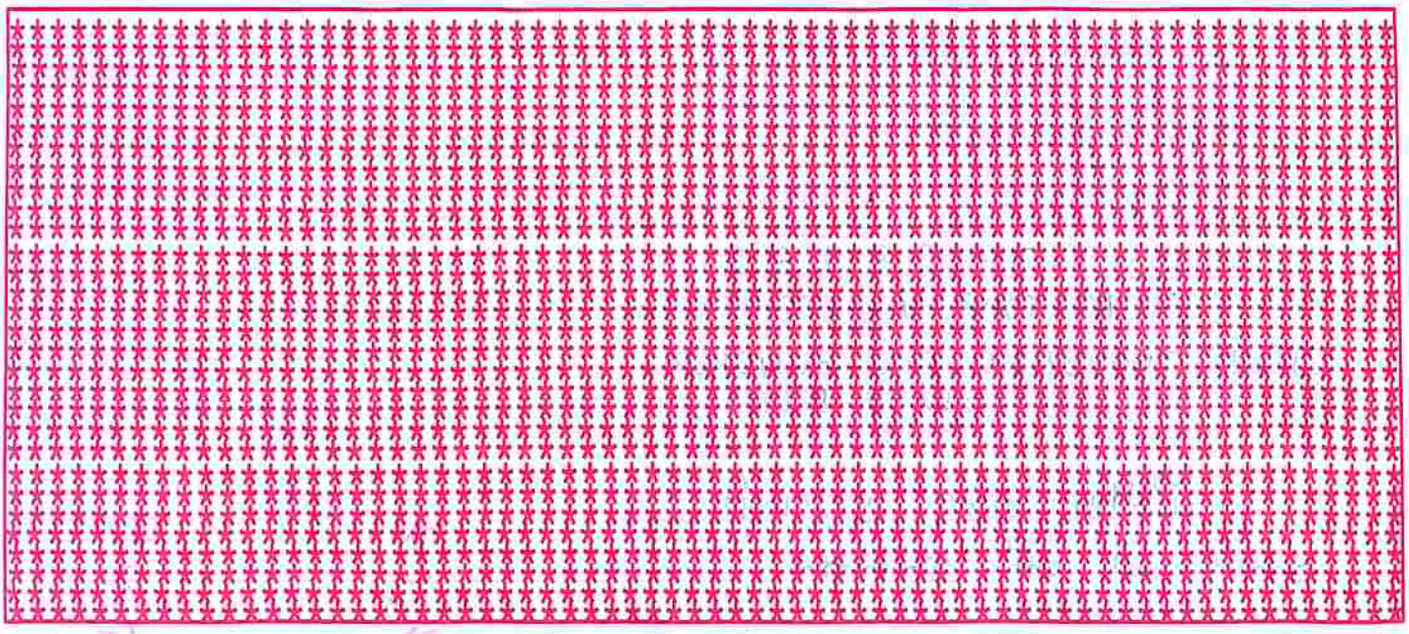
(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर [ ][ ][ ][ ][ ]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 167/2020



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

– उत्तर –

खण्ड 'ब'

(5) माधुर्य गुण :- जहाँ अनुस्वार युक्त कोमल वर्ण हो पर ट, ठ, ड, व ढ को छोड़कर रेफ व लम्बे समासों को छोड़कर मधुर अभिप्राय वाली रचना हो, माधुर्य गुण होता है। श्रृंगार, करुण व शांत रसों का प्रयोग।

(6) अक्रमत्व – जहाँ पर शब्दों का क्रम गलत हो। काव्य में वहाँ अक्रमत्व दोष होता है।

उदा :-

"समय सबल निरबल करत मनहुँ यह बात।

दुष्क्रमत्व = जहाँ शास्त्र-विहित शब्दों का क्रम गलत हो वहाँ दुष्क्रमत्व दोष होता है।

उदा :- "मारुत नंदन मारुत को, मन को खगराज को वेग लजाये।"

(7) हरिगीतिका छन्द :- जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 28-28 मात्राएँ होती है, व 16 व 12 मात्राओं पर यति होती है। चरणान्त एक लघु व एक गुरु होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उदा :-

"अधिकार खोकर बैठ रहना महादुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड
देना धर्म है"

(8) द्रुतविलम्बित छन्द :- यह वर्णिक चार चरणों का छन्द है, जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण के क्रम से कुल 12-12 वर्ण होते हैं, द्रुतविलम्बित होय -
न - भा - भ - र।

उदाहरण -

"दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला"

(9) अन्योक्ति - अलंकार :-

जिस अलंकार में अप्रस्तुत का वर्णन कर प्रस्तुत का बोध कराया जाता है, वहां अन्योक्ति अलंकार होता है।

अप्रस्तुत अर्थात् उपमान तथा प्रस्तुत उपमेय। वर्णन तो अप्रस्तुत का किया जाता है परन्तु प्रतीति प्रस्तुत की होवे वहां अन्योक्ति अलंकार होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उदा:-

"माली आवत देखिके, कलियन करी पुकार
फूले-फूले चुन लिये कालिह हमारी बार"

प्रस्तुत उदा. में माली, कली तथा फूल अप्रस्तुत है।

इसमें युवा कहते हैं, कि काल वृद्धों को ले जा रहा है, कुछ समय बाद हमारी बारी आने वाली है।

(10) विभावना :- जिस अलंकार में बिना कारण के अथवा विपरीत कारण के कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदा :-

"बिनु पद चले, सुने बिनु काना"

प्रस्तुत उदाहरण में बिना पैर के चलने तथा बिना कान के सुनने का वर्णन किया गया है।

अतः यहाँ विभावना अलंकार है।

विभावना अलंकार, विशेषोक्ति अलंकार का विपरीतार्थक होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड 'स'

(11) पीतल की मूर्ति ---------- भीतर आए

कठिन - शब्दार्थ - स्पंदन = तेज ;
दीप्ति = प्रकाश ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश "स. ही. वा. अज्ञेय" द्वारा रचित 'शेव और देव' शीर्षक से लिया गया है ।

इसमें कवि ने वर्णन किया है कि व्यक्ति को बौद्धिक चेतना के आधार पर चलकर ही कार्य करना चाहिए।

व्याख्या :-

प्रो कलेखक कहता है कि जब प्रो. साहब उस मन्दिर में गए, वहाँ उन्होंने पत्थर की कई मूर्तियां देखी । उन्होंने कहाँ की पीतल की मूर्ति की तुलना में पत्थर की मूर्ति अच्छी होती है ।

वे जब मूर्तियों को देख रहे थे तो उनका हृदय तेज गति से कर रहा था क्योंकि वह मूर्ति अति सुन्दर थी । वे जैसे ही मूर्ति उठाने लगें फिर बाहर जाकर देखा, लेकिन उन्हे कोई दिखाई नही दिया । उस मन्दिर में कोई नही आता था । कई सालो से यह उजाड़ पड़ा हुआ था । यहाँ आकर भी कवते ही क्या । भगवान के प्रति आस्था तथा सहानुभूति से प्रो. साहब मन्दिर में

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

गए व उन्होंने सोच समझकर देवी की मूर्ति को उठा लिया।

विशेष :- (1) इनमें पुरानी वस्तुओं के प्रति आकर्षण की ओर संकेत किया है
(2) भाषा सहज, सुबोध तथा शैली भावाभिव्यंजक है।

---

(12) विधि ---------- कहर है।

कठिन - शब्दार्थ :-

हरि - पद - पंकज = विष्णु के पैर, गिरिस = भगवान शिव, भूपति = राजा।

प्रसंग :- प्रस्तुत अवतरण 'पद्माकर' द्वारा रचित 'गंगा - स्तुति' शीर्षक से उद्धृत है। इसमें गंगा की महानता को व्यक्त किया गया है।

व्याख्या :-

कवि पद्माकर कहते हैं कि गंगा ब्रह्मा के कमण्डल की सिद्धि है, तथा भगवान विष्णु के चरणों से निकली है।

पद्माकर कहते हैं कि भगवान शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण कर रखा है।

गंगा नदी तो ऐसी है जो सभी पापों का नाश करने वाली है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राजा भगीरथ ने गंगा को स्वर्ग लोक से धरती पर लाया था। राजा भगीरथ का रथ तो आगे-2 चला तथा गंगा की धारा उस स्थान तक बहती रही जहां सगर के साठ हजार पुत्रों की मौत हुई थी। राजा जह्नु ने कठोर जप कर गंगा को पुत्री के रूप में अपनाया गंगा तो कामधेनु के समान है जो बिना मांगे सब कुछ देती है।

(काव्य-सौष्ठव)

विशेष :- (i) पौराणिक आख्यान के अनुसार गंगा की महत्ता का वर्णन किया गया है।

(ii) भाषा 'अलंकार' प्रधान है।

---

(13) कबीर दास जी ने अपने दोहों में गुरु की महिमा का बखान किया गया है। अपनी अनुभूतियों को सहज व प्रभावशाली ढंग से जनमानस के हृदय में पहुंचाने में सिद्धहस्त थे।

कबीर दास जी कहते हैं कि गुरु ही अज्ञान से मुक्ति दिलाकर परमात्मा का साक्षात्कार करवाता है। गुरु अपने शिष्य को ऐसा मार्ग बताता है, जिससे वो सहज ही चल सके।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कबीर दास जी ने गुरु व गोविन्द में वास्विक अन्तर या भेद बताया है। अर्थात गुरु व गोविन्द दोनों एक ही हैं केवल आकार में भिन्नता है। अर्थात् जो व्यक्ति जीवित अवस्था में ही मरा-सा हो जाता है, अर्थात सांसारिक विषयों से विमुख हो जाता है, उसे परमात्मा स्वरूप बताया है।

गुरु शिष्य के हृदय में ज्ञान रूपी दीपक प्रज्जवलित करता है। उस ज्ञान रूपी दीपक के प्रकाश से ही शिष्य संसार-सागर को पार कर लेता है जब परमात्मा की कृपा होती है, तब गुरु की प्राप्ति होती है। इस कारण सदैव जीवन में परमात्मा का ध्यान स्मरण करना चाहिए।

'गुरु' शिष्य को अज्ञानता, अन्धकार, में निकालकर प्रकाशवान स्थान पर ले जाता है।

इस प्रकार 'गुरु' का हमारे जीवन में अत्यंत महत्व है।

---

(14) श्रीधर पराड़कर के अनुसार आज भारत भूमि के पास अकूत संसाधन हैं तथा प्राकृतिक भूमि उपलब्ध है, फिर भी भारत पतन की दिशा में जा रहा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

इस पृथ्वी पर ऐसा कोई देश नहीं है, जिसके पास भारत के समान प्रकृत वैभव व प्रकृति प्रदत्त संसाधन हैं। इस सम्पन्नता के कारण ही प्राचीन काल में यह भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था। यहां अनेक शोषक व शोषितों द्वारा यहां के वैभव को लूटा गया था। महमूद गजनवी ने यहां के सोमदेव मंदिर से काफी धन लूटा था। अंग्रेजी भी इसी कारण भारत में आए थे।

जहां भारत पिछड़ा हुआ है। इसका कारण यह नहीं है कि भारतीय मूढ़ हैं, निकम्मे हैं। इसका कारण है, भारतीयों में आत्म-विश्वास व आत्म-प्रत्यय की कमी है। अगर भारतीयों में यह भावना भर से आ जाए तो हम भीर से सम्पन्न हो सकते हैं।

इसका कारण यह भी का है - लोगों की विकृत मानसिकता, भ्रष्टाचार है।

अब हमें पुन जागना क है व देश के पुनरुद्धार का भार उठाना है।

BSEB-167/2020

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(15) जैनेन्द्र कुमार की 'पाजेब' कहानी में जब मुन्नी की माँ पाजेब को सम्भालकर बक्से में रखती है।

तब दूसरे दिन देखने पर उनमे से एक पाजेब ही मिलती है, दूसरी नही मिलती है। तब बंसी नौकर पर शंका करने लग जाती है।

तथा उसके पति को भी पाजेब खोने का अपराधी मानने लगती है।

तब कहानी का कथानायक कहता है कि दोष तो तुम करती हो अर्थात् लापरवाह तो तुम हो, उल्टा दोष मुझे दे देती हो।

(16) तुलसीदास जी भारत के श्रेष्ठ कवि हैं क्योंकि उन्होंने ही भक्ति आंदोलन की नींव रखी थी। वे रामभक्त थे। तुलसीदास जी के भक्ति आंदोलन को समन्वयवादी काव्य तथा अखिल भारतीय आंदोलन भी कहा जाता है। इन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक विचारधारा की दृष्टि से जो भी भाव व्यक्त किए हैं तथा लोकमंगल की भावना से जिन संकीर्ण विचारधाराओं की दृष्टि से जो भाव व्यक्त किए, इस कारण इन्हे भारत के श्रेष्ठ कवि या भक्ति काल का लोकनायक कहा जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इन्होंने अपने काव्य में ऊंच-नीच आदि का कोई स्थान नही दिया है इनके राम छोटी जाति के लोगों को गले लगाते थे -

"जातिहीन अघजन्म महि,"

इस कारण इन्हे भक्ति के श्रेष्ठ कवि कहते है

(17) काज परै कछु और, काज सरै कछु और

इन पंक्तियों के माध्यम से रहीमदास जी कहते है कि इस संसार मे सारे लोग स्वार्थ का आचरण करते है सारे काम स्वार्थ से साधे जाते है जब किसी व्यक्ति का किसी से काम पड़ता है, तो वह अपनत्व भाव प्रकट करता है, चापलूसी करते है। परन्तु जब व्यक्ति का काम हो जाता है अर्थात् स्वार्थ सिद्ध हो जाता है। तब लोग पहले वाला अपनत्व भूल जाते है।

जैसे - विवाह होने पर दूल्हा सिर पर सेहरा बाँधता है, परन्तु विवाह होने के बाद उसे पानी में बहा दिया जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(18) 'जयशंकर प्रसाद' द्वारा रचित पंक्तियों में कवि कहता है कि यह पराधीनता काल की रचना है।

जब मातृभूमि की आजादी की लड़ाई लड़ते हुए महाराणा प्रताप की मृत्यु का अन्तिम समय निकट आता है, तो वे व्याकुल हो जाते हैं कि मेरे न रहने पर इस मातृभूमि की स्वतंत्रता का भार कौन उठायेगा? कौन कहेगा कि हाँ मैं इस देश की स्वाधीनता की रक्षा करूंगा? यह ओजस्वी वाणी सुनने के लिए आज भी प्रताप की वह आवाज पिछोले झील की तरंगों के रूप में प्रतिध्वनित हो रही है आज भी महाराणा प्रताप की छतरी वहाँ पड़ी दिखाई देती है।

(19)

– कवि - परिचय –

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(जन्म - 1896)

(मृत्यु - 1971)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म 1896 ई. प० बंगाल (मेदिनीपुर) में हुआ था। तीन वर्ष की छोटी अवस्था में माता का तथा युवावस्था तक आते आते पिता की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इन्होंने अपने काव्य में ऊँच - नीच आदि को कोई महत्व नही दिया है। इनके राम छोटी जाति के लोगों को गले लगाते है -

"जातिहीन अघजन्म माहि"

इसी कारण इन्हे भारत का श्रेष्ठ कवि कहा जाता है।

की मृत्यु हो गई। निराला का सम्पूर्ण जीवन संघर्षमय रहा। इलाहाबाद से इनकी कई स्मृतियाँ जुड़ी हुई है इनका निधन 1971 को हुआ था।

छायावादी कवियो 'निराला' सबसे महत्वपुर्ण कवि है।

रचनाएँ :-

(1) 'अनामिका'
(2) 'परिमल'
(3) 'गीतिका'
(4) 'तुलसीदास'
(5) 'अनिमा'
(6) 'वेला'
(7) 'नये - पत्ते'
(8) 'अर्चना'
(9) 'आराधना'

आदि इनकी रचनाएँ है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(20) सेनापति कवि द्वारा रचित 'ऋतुवर्णन' में कवि चतुरंगी सेना का वर्णन किया गया। वसंत ऋतु आने पर वातावरण में तरह-तरह के फूल खिल जाते हैं तथा उपवनों तथा बागों में पेड़-पौधों पर नई कलियाँ आ जाती हैं। इस प्रकार जैसे पेड़-पौधे ही 'चतुरंगी' सेना हो। चतुरंगी सेना में पैदल, घुड़सवार, हाथी, रथ होते हैं।

इस प्रकार पेड़-पौधों की तुलना चतुरंगी सेना से की गई है।

(21) हरिशंकर परसाई के अनुसार भारत की भाषा सामान्य होते हुए भी विशेष क्षमता रखती थी। क्योंकि आज विश्व के किसी भी क्षेत्र में जाकर देखने पर पता चलता है कि भारत की भाषा जन-जन में व्याप्त है।

भारत की भाषा सहज, सरल, तथा भावाभिव्यंजक होती है।

खण्ड 'ढ'

(22) 'राष्ट्र का स्वरूप' तीन तत्वों से मिलकर बनता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) भूमि
(ii) जन और
(iii) संस्कृति
इन तीनों के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप बनता है।
~~इस पृथ्वी पर निवास~~ करने वाले लोगों को अपनी माता के प्रति प्रेम व आदर भाव रखना चाहिए। माता भूमि, पुत्रों अर्थात् पृथिव्यां ~~पर~~ जन-जन में जब ~~यह सूत्र~~ आ जाता है कि भूमि माता है व मैं उसका पुत्र हूँ। माता के प्रति अनुराग व सेवाभाव होना चाहिए। इसमें ~~स्वार्थ~~ नहीं करना चाहिए यदि हम निःस्वार्थ माता की सेवा करेंगे तो माता अपनी संतान को समान भाव से देती है परन्तु जैसे ही स्वार्थ आता है, यह व्यक्ति के अधोपतन का सूचक है।
हमें माता के प्रति प्रेम रखना चाहिए जिससे कि हमें माता भी हमें समान रूप से अपना आशीर्वाद दे सके।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(23) निर्वासित कविता में एक वानप्रस्थ दम्पति की कहानी है। निश जो अपने स्वतंत्रता पूर्ण वातावरण में खुशी से रह रहे थे किन्तु अचानक उनके अकसर बेटा उन्हे विदेश में बुला लेता है।

जिससे वे स्वतंत्र वातावरण को छोड़कर बंधनपूर्ण जीवन जीने वहाँ चले जाते है।

इसके पश्चात उनके छोटे बेटे सुधीर के आने पर दोनों यह कैसला करते है कि एक के साथ पिताजी व एक के साथ माँ रहेगी। यह निर्णय सुनकर दोनों दम्पति दुःख के सागर में डूब जाते है। इस अवस्था में उन्हे अलग करना पाप था। वे मन में सोचते रहे कि हमारा अपराध क्या है।

इस प्रकार इस कविता में वृद्ध दम्पति को अलग कर दिया जाता है।

(24) स्वामी विवेकानंद के अनुसार इस सांसारिक जीवन में व्यक्ति जन्म लेता है। व उसका मरण भी निश्चित है। अच्छा कार्य करने पर श्रेष्ठ योनि में जन्म लेता है।

यह भारत की भूमि पुण्य लीला-स्थल है इसमें हमें अच्छे कार्य करके अपनी भूमि को गर्व से ऊंचा करना चाहिए।

IISER-16/7/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

भारत - भूमि ऐसी है, जो लोगों को अच्छे कार्य करने की ओर प्रवृत्त करती है, जिससे उसका जीवन सफल हो जाता है।

विवेकानंद कहते हैं, कि निरस्तित्व में से अस्तित्व का जन्म नहीं हो सकता है व अस्तित्व का आधार निरस्तित्व नहीं हो सकता। यह कार्य - कारिणी सिद्धांत है।

इस सिद्धांत पर चलकर ही व्यक्ति जन्म - मरण से छुटकारा पा सकता है।

(25) योगानंद जी ने जगदीश चन्द्र बोस से कहा की जिस प्रकार प्राणियों में रक्त संचार होता है, उसी प्रकार पेड़ - पौधे में भी रस - संचार होता है। पेड़ों में एक गोल - नलिका होती जिससे जो क्रमिक वृतों से सिकुड़ी हुई होती है। उसी नली से पेड़ - पौधे हृदय की गति लेती है। सब प्रकार से मिलाकर इस प्रयोग का परिणाम निकलता है कि इस पृथ्वी का प्रत्येक अंश एक ही सूत्र में बंधा होता है। यह जान लेने के बाद विशाल वृक्षों को भी एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए ले जा सकते

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दूसरे स्थान पर ले जाने पर भी उसमे वैसे ही वृद्धि व विकास होता है, जैसे पहले वाले स्थान पर हुआ था।

(26.) अब गेहूँ गुलाब पर विजय प्राप्त करे। गेहूँ, प्रतीक है, भौतिक आवश्यकता का तथा 'गुलाब' मानसिक तृप्ति का। अर्थात् भौतिक आवश्यकता पर मानसिक तृप्ति की विजय हो।

नई आकांक्षाओ पर को पुरानी आकांक्षाओ पर विजय प्राप्त करनी है।

मानव स्थूल वासनाओ व सूक्ष्म वासनाओ की विजय प्राप्त करे। तभी मानव सुख व आनन्द से रह सकेगा।

गुलाब व गेहूं, मे संतुलन बनाए रखना अत्यधिक कठिन है। संतुलन बनाये रखा तब तक तो विकास होता रहा परन्तु जैसे ही यह संतुलन टूटा गेहूं प्रतीक बना श्रम का व 'गुलाब' विलासिता का। इस कारण गुलाब गेहू पर विजय प्राप्त करे।

BSEB-167/2020

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ'

(1) नई कविता प्रयोगवाद का ही एक नया रूप है। प्रयोगवाद का प्रारम्भ 1943 में माना जाता है, जब अज्ञेय द्वारा प्रथम तार - सप्तक प्रकाशित हुआ था। 1943 से 1953 तक प्रयोगवाद रहा तथा 1953 के बाद रचित सभी विधाओं को नई कविता में रखा गया।

प्रयोगवाद शब्द 'रूढ़' है तथा भ्रामक है। पर नई कविता रूढ़ नही है, बल्कि साधन है। दोहरा साधन।

नई कविता की विशेषताएं - (1) सामाजिक चेतना (2) राष्ट्रीय चेतना (3) सामान्य भावना (4) वर्ण्य विषय का विस्तार (5) प्रकृति चित्रण (6) भावानुकूलता आदि। नई कविता के प्रमुख कवि है।

(1943) प्रथम तार सप्तक - (1943) नैमिचन्द जैन, भारतभूषण अग्रवाल, गजानन माधव मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर आदि।

(1949) दूसरा तार सप्तक - शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती

(1953) तीसरा तार - सप्तक - (1953) केशवचन्द्र, कुंवर नारायण आदि।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) द्विवेदी युग को 'जन - जागरण' काल भी कहते है। इस युग के प्रमुख पथ प्रदर्शक द्विवेदी होने के कारण इसे द्विवेदी युग कहा गया।
द्विवेदी जी के युग में अनेक विधाओं पर लिखा गया। इसकी भाषा विचारात्मक, भावात्मक थी।
द्विवेदी जी के उपन्यास = 'काव्य मंजूषा', 'सुमन', 'काव्यकलाप', 'अबला - विलाप', आदि है। इनके अतिरिक्त इनकी उपन्यास यात्रा को व सफल बनाने का श्रेय निम्न लोगो को जाता है।
'नाथूराम शर्मा', 'शंकर', 'सीधर पाठक', 'महावीर प्रसाद द्विवेदी', 'अयोध्यासिंह उपाध्यय', 'गयाप्रसाद शुक्ल सनेही', 'रामनरेश त्रिपाठी', 'मैथिलीशरण गुप्त प्रमुख लेखक है।

द्विवेदी युग का प्रारम्भ 1900 ई से माना जाता है। क्योकि इसी काल में 'सरस्वती' का प्रकाशन हुआ था।
द्विवेदी जी एक ऐसे कवि थे, जिन्होने सदैव अपने उपन्यासो को मतवादी संकीर्णता से बचाए रखा, यही कारण है कि इनके उपन्यास आधुनिक होते हुए भी आधुनिक होने का ढिंढोरा पीटते नजर नही आते है

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

④ भारतेन्दु युग में कई कवि हुए जिनमें भारतेन्दु प्रमुख कवि है।
'भारतेन्दु हरिश्चन्द', 'प्रतापनारायण मिश्र', 'बदरीनारायण चौधरी', 'राधाचरण गोस्वामी', 'प्राणचन्द चौहान', 'लछिराम' आदि प्रमुख कवि है।

(1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र – इनकी प्रमुख कृतियां 'वर्षा विनोद', 'सती प्रताप', 'नील देवी', 'गीत गोविन्दानन्द', 'मुद्राराक्षस', 'अंधेरी नगरी' आदि।
इन्होंने दो पत्रिकाओं का भी प्रकाशन किया। 'कविवचनसुधा', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका'

(2) बदरीनारायण चौधरी – 'बंद गली का आखिरी मकान', 'वहाँ तक' आदि कृतियाँ है।
इन्होंने एक पत्रिका का प्रकाशन किया 'हिन्दी प्रदीप'।

(3) प्रतापनारायण मिश्र – हिन्दी के 'स्टीव एडिसन' के नाम से जाने वाले कवि ने 'ब्राह्मण' नामक पत्रिका का सम्पादन किया था।

(4) राधाचरण गोस्वामी :– राधाचरण गोस्वामी ने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।

(5) प्राणचन्द चौहान

(6) लछिराम आदि।

RSEK-16/7/2020

क द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(3)

जीवनी – किसी विशेष 'व्यक्तित्व' या प्रसिद्ध व्यक्ति की जीवन से लेकर मरण तक की सभी घटनाओं का वर्णन 'जीवनी' होती है।

भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक, पौराणिक व सामयिकता से जुड़े लोगों की अधिक जीवनियाँ लिखी गई।
इस विधा में 'महाराणा प्रताप' की जीवनी भी लिखी गई।
'महात्मा गाँधी' की जीवनी पर प्रकाश डालने वाले कवि लेखन मोहन राकेश थे।
'मोहन राकेश' ने यात्रा-वृतांत भी लिखे तथा 'जीवनीयों' पर भी अपनी लेखनी चलाई

आत्मकथा – लेखक या पाठक द्वारा स्वयं के जीवन से जुड़ी घटनाओं का स्वयं द्वारा वर्णन करना 'आत्मकथा' कहलाता है।
जैसा कि शब्द से स्पष्ट है कि 'आत्मकथा' अर्थात् स्वयं की आत्मा की कथा।
आत्मकथा लिखने में 'भारत-भारती' के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त के पिता सेठ रामचरण को प्रमुख माना जाता है

10/10